

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES



ISSN 2277 – 9809 (online)

ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

अमृत काल विज्ञान 2047: ग्रेट निकोबार परियोजना और भारत की वैश्विक समुद्री शक्ति का उदय

राहुल

पीजीटी राजनीतिक विज्ञान, एल.टी.टी.एम पब्लिक स्कूल घरौंडा (करनाल)

rahulbeedlan@gmail.com

सार (Abstract)

भारत ने स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूर्ण होने तक वर्ष 2047 में एक विकसित राष्ट्र बनने का लक्ष्य निर्धारित किया है, जिसे 'अमृत काल विज्ञान 2047' के नाम से जाना जाता है। इस दृष्टि के अंतर्गत आर्थिक विकास, राष्ट्रीय सुरक्षा, आधारभूत संरचना, ब्लू इकोनॉमी तथा वैश्विक नेतृत्व को विशेष महत्व दिया गया है। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति की दिशा में ग्रेट निकोबार परियोजना एक अत्यंत महत्वपूर्ण राष्ट्रीय पहल है।

ग्रेट निकोबार द्वीप हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की सामरिक स्थिति को सुदृढ़ करने वाला एक महत्वपूर्ण भू-भाग है। यह परियोजना अंतरराष्ट्रीय कंटेनर ट्रांसशिपमेंट टर्मिनल, ग्रीनफील्ड अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा, आधुनिक टाउनशिप तथा ऊर्जा अवसंरचना के विकास पर आधारित है। इसकी भौगोलिक स्थिति पूर्व-पश्चिम अंतरराष्ट्रीय समुद्री व्यापार मार्ग के अत्यंत निकट होने के कारण भारत को वैश्विक समुद्री व्यापार, लॉजिस्टिक्स तथा इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में नई रणनीतिक पहचान प्रदान करती है।

यह शोध पत्र अमृत काल विज्ञान 2047 के संदर्भ में ग्रेट निकोबार परियोजना के सामरिक, आर्थिक तथा समुद्री महत्व का अध्ययन प्रस्तुत करता है। शोध में यह स्पष्ट किया गया है कि यह परियोजना भारत को वैश्विक समुद्री शक्ति के रूप में स्थापित करने, ब्लू इकोनॉमी को गति देने, विदेशी ट्रांसशिपमेंट बंदरगाहों पर निर्भरता कम करने तथा राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। साथ ही, परियोजना के अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण तथा

जनजातीय समुदायों के हितों के संरक्षण हेतु अपनाए गए सरकारी उपायों का भी तथ्यात्मक उल्लेख किया गया है।

यह अध्ययन निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि ग्रेट निकोबार परियोजना केवल एक अवसंरचनात्मक विकास परियोजना नहीं, बल्कि भारत के समुद्री भविष्य, आर्थिक समृद्धि और वैश्विक रणनीतिक नेतृत्व की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

Keywords : अमृत काल विज़न 2047, ग्रेट निकोबार परियोजना, ब्लू इकोनॉमी, वैश्विक समुद्री शक्ति, इंडो-पैसिफिक

1. परिचय (Introduction)

इक्कीसवीं सदी को व्यापक रूप से समुद्री शक्ति (Maritime Power) और हिंद-प्रशांत (Indo-Pacific) क्षेत्र की सदी माना जा रहा है। वर्तमान वैश्विक व्यवस्था में समुद्री व्यापार, ऊर्जा सुरक्षा, आपूर्ति श्रृंखलाओं (Supply Chains) तथा सामरिक प्रतिस्पर्धा का महत्व निरंतर बढ़ रहा है। विश्व के लगभग 90 प्रतिशत अंतरराष्ट्रीय व्यापार का परिवहन समुद्री मार्गों से होता है, जिसके कारण समुद्री अवसंरचना और रणनीतिक बंदरगाह किसी भी राष्ट्र की आर्थिक एवं सामरिक शक्ति के महत्वपूर्ण आधार बन गए हैं।

भारत लगभग 7,500 किलोमीटर लंबी समुद्री तटरेखा, 1,382 से अधिक द्वीपों तथा हिंद महासागर में अपनी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति के कारण एक प्रमुख समुद्री राष्ट्र है। स्वतंत्रता की शताब्दी वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र (Viksit Bharat) बनाने के उद्देश्य से भारत सरकार ने अमृत काल विज़न 2047 की परिकल्पना प्रस्तुत की है। इस विज़न के अंतर्गत आर्थिक विकास, आधुनिक आधारभूत संरचना, राष्ट्रीय सुरक्षा, आत्मनिर्भरता, ब्लू इकोनॉमी तथा वैश्विक नेतृत्व को प्रमुख प्राथमिकताएँ प्रदान की गई हैं।

इसी व्यापक दृष्टिकोण के अंतर्गत ग्रेट निकोबार परियोजना को भारत की सबसे महत्वपूर्ण समुद्री अवसंरचना परियोजनाओं में से एक माना जा रहा है। इस परियोजना का उद्देश्य ग्रेट निकोबार द्वीप को एक अंतरराष्ट्रीय कंटेनर ट्रांसशिपमेंट हब, आधुनिक हवाई संपर्क, विश्वस्तरीय ऊर्जा अवसंरचना तथा नियोजित शहरी विकास के माध्यम से हिंद महासागर क्षेत्र में भारत के एक रणनीतिक और आर्थिक केंद्र के रूप में विकसित करना है।

ग्रेट निकोबार की भौगोलिक स्थिति इसे पूर्व-पश्चिम अंतरराष्ट्रीय समुद्री व्यापार मार्ग के अत्यंत निकट स्थापित करती है। इससे भारत को वैश्विक समुद्री व्यापार में अपनी भागीदारी बढ़ाने, विदेशी ट्रांसशिपमेंट बंदरगाहों पर निर्भरता कम करने तथा हिंद-प्रशांत क्षेत्र में अपनी रणनीतिक उपस्थिति को और सुदृढ़ करने का अवसर प्राप्त होता है।

यह शोध पत्र अमृत काल विज़न 2047 के संदर्भ में ग्रेट निकोबार परियोजना के सामरिक, आर्थिक एवं समुद्री महत्व का अध्ययन प्रस्तुत करता है। साथ ही, यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि यह परियोजना भारत को एक सशक्त वैश्विक समुद्री शक्ति के रूप में स्थापित करने की दिशा में किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

2. अमृत काल विज़न 2047 : अवधारणा, उद्देश्य एवं भारत का समुद्री दृष्टिकोण

अमृत काल भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूर्ण होने के उपरांत वर्ष 2022 से 2047 तक की वह परिवर्तनकारी अवधि है, जिसका उद्देश्य भारत को स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे होने तक एक विकसित, आत्मनिर्भर, समृद्ध एवं वैश्विक नेतृत्वकर्ता राष्ट्र के रूप में स्थापित करना है। इस विज़न में आर्थिक विकास, आधुनिक अवसंरचना, सुशासन, तकनीकी नवाचार, राष्ट्रीय सुरक्षा, सतत विकास तथा वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को विशेष महत्व दिया गया है।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में समुद्री क्षेत्र किसी भी राष्ट्र की आर्थिक प्रगति, व्यापारिक विस्तार तथा रणनीतिक शक्ति का प्रमुख आधार बन चुका है। हिंद महासागर विश्व के सबसे महत्वपूर्ण समुद्री क्षेत्रों में से एक है, जहाँ से वैश्विक व्यापार तथा ऊर्जा आपूर्ति का बड़ा भाग होकर गुजरता है। भारत की भौगोलिक स्थिति इस महासागर के मध्य में होने के कारण उसे प्राकृतिक सामरिक बढ़त प्राप्त है।

इसलिए अमृत काल विज़न 2047 में समुद्री अवसंरचना (Maritime Infrastructure) के विकास को विशेष प्राथमिकता दी गई है।

भारत सरकार का उद्देश्य केवल तटीय क्षेत्रों का विकास करना नहीं है, बल्कि देश को वैश्विक समुद्री व्यापार, लॉजिस्टिक्स, जहाजरानी, बंदरगाह विकास तथा ब्लू इकोनॉमी का प्रमुख केंद्र बनाना भी है। इसी दिशा में सागरमाला कार्यक्रम, Maritime India Vision 2030, Maritime Amrit Kaal Vision 2047 तथा ग्रेट निकोबार परियोजना जैसी पहलें एक-दूसरे की पूरक हैं।

Maritime Amrit Kaal Vision 2047 का उद्देश्य भारत के बंदरगाहों को विश्वस्तरीय बनाना, कंटेनर ट्रांसशिपमेंट क्षमता बढ़ाना, समुद्री व्यापार को अधिक प्रतिस्पर्धी बनाना तथा भारत को वैश्विक समुद्री आपूर्ति श्रृंखला का प्रमुख केंद्र बनाना है। इसके माध्यम से भारत विदेशी ट्रांसशिपमेंट बंदरगाहों पर अपनी निर्भरता कम करते हुए स्वयं को हिंद-प्रशांत क्षेत्र के प्रमुख समुद्री केंद्र के रूप में स्थापित करना चाहता है।

इस व्यापक समुद्री दृष्टिकोण में ग्रेट निकोबार परियोजना अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखती है। ग्रेट निकोबार द्वीप पूर्व-पश्चिम अंतरराष्ट्रीय समुद्री मार्ग से लगभग 40 नॉटिकल मील की दूरी पर स्थित है। इसी कारण यह क्षेत्र अंतरराष्ट्रीय कंटेनर ट्रांसशिपमेंट, समुद्री व्यापार, राष्ट्रीय सुरक्षा तथा क्षेत्रीय संपर्क के लिए अत्यधिक उपयुक्त माना जाता है। परियोजना के अंतर्गत विश्वस्तरीय कंटेनर ट्रांसशिपमेंट टर्मिनल, ग्रीनफील्ड अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा, आधुनिक टाउनशिप तथा ऊर्जा अवसंरचना विकसित की जा रही है, जिससे भारत की समुद्री क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि होने की संभावना है।

अमृत काल विज़न 2047 का एक अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य ब्लू इकोनॉमी को बढ़ावा देना है। ब्लू इकोनॉमी के माध्यम से समुद्री संसाधनों का सतत उपयोग करते हुए व्यापार, मत्स्य पालन, पर्यटन, समुद्री परिवहन, जहाज निर्माण तथा तटीय विकास को नई गति प्रदान की जा सकती है। ग्रेट निकोबार परियोजना इन सभी उद्देश्यों को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण आधारभूत परियोजना के रूप में उभर रही है।

इस प्रकार, अमृत काल विज़न 2047 केवल आर्थिक विकास का दस्तावेज़ नहीं है, बल्कि यह भारत को एक सशक्त समुद्री राष्ट्र, वैश्विक व्यापारिक केंद्र तथा हिंद-प्रशांत क्षेत्र में उत्तरदायी शक्ति के रूप में स्थापित करने का व्यापक राष्ट्रीय रोडमैप भी प्रस्तुत करता है। ग्रेट निकोबार परियोजना इस विज़न को वास्तविकता में परिवर्तित करने वाली प्रमुख पहलों में से एक है।

3. ग्रेट निकोबार परियोजना : अवधारणा, विकास एवं प्रमुख विशेषताएँ

ग्रेट निकोबार परियोजना भारत सरकार की एक महत्वाकांक्षी समुद्री एवं आधारभूत संरचना विकास परियोजना है, जिसका उद्देश्य ग्रेट निकोबार द्वीप को एक वैश्विक समुद्री, आर्थिक एवं रणनीतिक केंद्र के रूप में विकसित करना है।

यह परियोजना अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह के दक्षिणतम भाग में स्थित ग्रेट निकोबार द्वीप पर विकसित की जा रही है। इसकी भौगोलिक स्थिति हिंद महासागर और मलक्का जलडमरूमध्य के निकट होने के कारण इसे अत्यंत महत्वपूर्ण बनाती है।

परियोजना का मुख्य उद्देश्य भारत की समुद्री क्षमता को सुदृढ़ करना, अंतरराष्ट्रीय व्यापार को गति देना, आधुनिक आधारभूत संरचना का विकास करना तथा भारत को वैश्विक ट्रांसशिपमेंट नेटवर्क में एक प्रमुख स्थान दिलाना है। इस परियोजना के माध्यम से भारत विदेशी बंदरगाहों पर निर्भरता कम करते हुए स्वयं को एक प्रमुख समुद्री व्यापारिक केंद्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में अग्रसर है।

ग्रेट निकोबार परियोजना चार प्रमुख अवसंरचनात्मक घटकों पर आधारित है—

1. अंतरराष्ट्रीय कंटेनर ट्रांसशिपमेंट टर्मिनल (ICTT)

परियोजना के अंतर्गत लगभग 14.2 मिलियन TEU क्षमता वाला विश्वस्तरीय कंटेनर ट्रांसशिपमेंट टर्मिनल विकसित किया जा रहा है। यह बंदरगाह पूर्व-पश्चिम अंतरराष्ट्रीय समुद्री मार्ग से लगभग 40 नॉटिकल मील की दूरी पर स्थित है। इस कारण यह अंतरराष्ट्रीय कंटेनर यातायात के लिए अत्यंत उपयुक्त माना जाता है। इसके विकसित होने से भारत कोलंबो, सिंगापुर तथा अन्य विदेशी ट्रांसशिपमेंट बंदरगाहों पर अपनी निर्भरता कम कर सकेगा।

2. ग्रीनफील्ड अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा

परियोजना के अंतर्गत एक आधुनिक ग्रीनफील्ड अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का निर्माण किया जा रहा है, जिसकी प्रारंभिक क्षमता व्यस्त समय में लगभग 4,000 यात्रियों प्रति घंटा होगी। यह हवाई अड्डा पर्यटन, व्यापार, निवेश तथा सामरिक आवश्यकताओं की पूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

3. आधुनिक नियोजित टाउनशिप

परियोजना के अंतर्गत लगभग 16,610 हेक्टेयर क्षेत्र में एक आधुनिक एवं सुव्यवस्थित टाउनशिप विकसित की जाएगी। इसका उद्देश्य परियोजना से जुड़े कर्मचारियों, व्यावसायिक गतिविधियों तथा आवश्यक शहरी सेवाओं के लिए आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध कराना है।

4. ऊर्जा अवसंरचना

परियोजना में लगभग 450 MVA क्षमता का गैस एवं सौर ऊर्जा आधारित हाइब्रिड पावर प्लांट स्थापित किया जाएगा। यह ऊर्जा संयंत्र परियोजना के विभिन्न घटकों को विश्वसनीय एवं सतत विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करेगा तथा स्वच्छ ऊर्जा के उपयोग को भी बढ़ावा देगा।

ग्रेट निकोबार परियोजना का विकास तीन चरणों (2025-2047) में प्रस्तावित है, जिससे आधारभूत संरचना का क्रमिक एवं व्यवस्थित विकास सुनिश्चित किया जा सके। इस चरणबद्ध विकास मॉडल का उद्देश्य आर्थिक प्रगति के साथ-साथ परियोजना के प्रभावी क्रियान्वयन को भी सुनिश्चित करना है। इस प्रकार, ग्रेट निकोबार परियोजना केवल एक बंदरगाह विकास परियोजना नहीं है, बल्कि यह भारत के समुद्री भविष्य, वैश्विक व्यापार, राष्ट्रीय सुरक्षा, ब्लू इकोनॉमी तथा अमृत काल विज़न 2047 को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण आधारशिला के रूप में उभर रही है।

4. भारत की वैश्विक समुद्री शक्ति के उदय में ग्रेट निकोबार परियोजना की भूमिका

वर्तमान समय में किसी भी राष्ट्र की शक्ति का आकलन केवल उसकी सैन्य क्षमता से नहीं, बल्कि उसके समुद्री प्रभाव, वैश्विक व्यापार में भागीदारी, बंदरगाह अवसंरचना तथा समुद्री सुरक्षा के आधार पर भी किया जाता है। भारत अपनी भौगोलिक स्थिति, विस्तृत समुद्री तटरेखा और हिंद महासागर में केंद्रीय स्थान के कारण एक प्रमुख समुद्री राष्ट्र है। अमृत काल विज़न 2047 के अंतर्गत भारत का लक्ष्य वैश्विक स्तर पर एक सक्षम, आत्मनिर्भर और प्रभावशाली समुद्री शक्ति के रूप में स्थापित होना है। इस लक्ष्य की प्राप्ति में ग्रेट निकोबार परियोजना की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

ग्रेट निकोबार द्वीप पूर्व-पश्चिम अंतरराष्ट्रीय समुद्री व्यापार मार्ग के निकट स्थित है, जहाँ से प्रतिदिन बड़ी संख्या में अंतरराष्ट्रीय मालवाहक जहाज गुजरते हैं। इस रणनीतिक स्थिति का लाभ उठाते हुए विकसित किया जा रहा अंतरराष्ट्रीय कंटेनर ट्रांसशिपमेंट टर्मिनल (ICTT) भारत को वैश्विक समुद्री व्यापार का महत्वपूर्ण केंद्र बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है। इसके माध्यम से भारत अपने कंटेनरों के ट्रांसशिपमेंट के लिए विदेशी बंदरगाहों पर निर्भरता कम कर सकेगा तथा समय और लागत दोनों में कमी आएगी।

यह परियोजना हिंद महासागर क्षेत्र (Indian Ocean Region-IOR) में भारत की रणनीतिक उपस्थिति को भी सुदृढ़ करती है। हिंद महासागर विश्व के सबसे महत्वपूर्ण समुद्री क्षेत्रों में से एक है, जहाँ व्यापार, ऊर्जा आपूर्ति और समुद्री संचार मार्गों का विशेष महत्व है। ग्रेट निकोबार में आधुनिक बंदरगाह और हवाई अड्डे के विकास से भारत इस क्षेत्र में अपनी उपस्थिति और प्रभाव को और अधिक मजबूत बना सकेगा।

राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से भी यह परियोजना अत्यंत महत्वपूर्ण है। आधुनिक समुद्री अवसंरचना के विकास से भारतीय नौसेना और तटरक्षक बल को बेहतर लॉजिस्टिक सहायता, तेज़ प्रतिक्रिया क्षमता तथा समुद्री निगरानी में सुविधा प्राप्त होगी। इससे समुद्री सीमाओं की सुरक्षा और आपदा प्रबंधन क्षमता में भी वृद्धि होगी।

इसके अतिरिक्त, यह परियोजना भारत की ब्लू इकोनॉमी को नई गति प्रदान करेगी। आधुनिक बंदरगाह, हवाई संपर्क, ऊर्जा अवसंरचना और नियोजित शहरी विकास से व्यापार, पर्यटन, निवेश, रोजगार तथा समुद्री सेवाओं के क्षेत्र में नए अवसर उत्पन्न होंगे। इससे स्थानीय तथा राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था दोनों को लाभ मिलने की संभावना है।

ग्रेट निकोबार परियोजना भारत की 'Act East Policy', SAGAR (Security and Growth for All in the Region) तथा Maritime Amrit Kaal Vision 2047 जैसी राष्ट्रीय पहलों को भी सशक्त आधार प्रदान करती है।

यह परियोजना भारत को हिंद-प्रशांत क्षेत्र में एक उत्तरदायी, विश्वसनीय और प्रभावशाली समुद्री शक्ति के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

अतः कहा जा सकता है कि ग्रेट निकोबार परियोजना केवल एक आधारभूत संरचना परियोजना नहीं, बल्कि भारत की समुद्री क्षमता, राष्ट्रीय सुरक्षा, वैश्विक व्यापारिक प्रतिस्पर्धा तथा अमृत काल विज़न 2047 को साकार करने वाली एक ऐतिहासिक पहल है।

5. ब्लू इकोनॉमी, व्यापार एवं आर्थिक विकास में ग्रेट निकोबार परियोजना का योगदान

भारत की ब्लू इकोनॉमी की अवधारणा समुद्री संसाधनों के सतत एवं प्रभावी उपयोग के माध्यम से आर्थिक विकास, रोजगार सृजन, समुद्री व्यापार, पर्यटन, मत्स्य पालन तथा तटीय विकास को बढ़ावा देने पर आधारित है। अमृत काल विज़न 2047 में ब्लू इकोनॉमी को भारत की दीर्घकालिक

आर्थिक प्रगति का एक महत्वपूर्ण आधार माना गया है। इस संदर्भ में ग्रेट निकोबार परियोजना भारत की समुद्री अर्थव्यवस्था को नई दिशा देने वाली एक महत्वपूर्ण पहल है।

परियोजना के अंतर्गत विकसित किया जा रहा अंतरराष्ट्रीय कंटेनर ट्रांसशिपमेंट टर्मिनल (ICTT) भारत को वैश्विक समुद्री व्यापार में अधिक प्रतिस्पर्धी बनाएगा। वर्तमान में भारत के अनेक कंटेनर कोलंबो, सिंगापुर तथा अन्य विदेशी ट्रांसशिपमेंट बंदरगाहों के माध्यम से भेजे जाते हैं, जिससे समय और लागत दोनों बढ़ जाते हैं। ग्रेट निकोबार में आधुनिक ट्रांसशिपमेंट सुविधा विकसित होने से यह निर्भरता कम होगी तथा भारत की व्यापारिक दक्षता में वृद्धि होगी।

यह परियोजना भारत को वैश्विक लॉजिस्टिक्स नेटवर्क में अधिक प्रभावी स्थान दिलाने में भी सहायक होगी। आधुनिक बंदरगाह, अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा, ऊर्जा अवसंरचना तथा नियोजित टाउनशिप के विकास से व्यापार, परिवहन एवं आपूर्ति श्रृंखला (Supply Chain) को नई गति मिलेगी। इससे विदेशी निवेश आकर्षित होने तथा नए औद्योगिक एवं व्यावसायिक अवसर विकसित होने की संभावना बढ़ेगी।

ग्रेट निकोबार परियोजना पर्यटन क्षेत्र के विकास के लिए भी महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है। आधुनिक हवाई संपर्क, बेहतर आधारभूत सुविधाएँ तथा द्वीप की प्राकृतिक विशेषताएँ घरेलू और विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करेंगी। इससे स्थानीय स्तर पर होटल, परिवहन, पर्यटन सेवाओं तथा अन्य सहायक क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों का विस्तार होगा।

ऊर्जा के क्षेत्र में परियोजना के अंतर्गत 450 MVA गैस एवं सौर ऊर्जा आधारित हाइब्रिड पावर प्लांट स्थापित किया जा रहा है। यह आधुनिक ऊर्जा प्रणाली परियोजना के विभिन्न अवसंरचनात्मक घटकों को विश्वसनीय विद्युत आपूर्ति प्रदान करेगी तथा स्वच्छ ऊर्जा के उपयोग को भी प्रोत्साहित करेगी।

यह परियोजना आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को भी मजबूत करती है। बंदरगाह, लॉजिस्टिक्स और समुद्री व्यापार के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता बढ़ने से भारत की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता में वृद्धि होगी। साथ ही, देश के पूर्वी समुद्री क्षेत्र में संतुलित क्षेत्रीय विकास को भी गति मिलेगी।

इस प्रकार, ग्रेट निकोबार परियोजना केवल एक अवसंरचनात्मक विकास योजना नहीं है, बल्कि यह ब्लू इकोनॉमी, व्यापार, निवेश, रोजगार, पर्यटन, ऊर्जा सुरक्षा और आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्यों को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती है। अमृत काल विज़न 2047 के संदर्भ में यह परियोजना भारत की आर्थिक प्रगति और वैश्विक समुद्री नेतृत्व को नई ऊँचाइयों तक ले जाने की क्षमता रखती है।

6. राष्ट्रीय सुरक्षा, इंडो-पैसिफिक रणनीति एवं नीति सुझाव

भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा में समुद्री क्षेत्र का महत्व निरंतर बढ़ता जा रहा है। हिंद महासागर क्षेत्र केवल व्यापार का प्रमुख माध्यम नहीं है, बल्कि यह ऊर्जा सुरक्षा, समुद्री संचार मार्गों तथा क्षेत्रीय स्थिरता का भी आधार है। इसलिए अमृत काल विज़न 2047 में समुद्री सुरक्षा और आधुनिक समुद्री अवसंरचना को राष्ट्रीय विकास की महत्वपूर्ण प्राथमिकताओं में शामिल किया गया है।

ग्रेट निकोबार परियोजना भारत की इसी व्यापक रणनीतिक सोच का एक महत्वपूर्ण भाग है। इसकी भौगोलिक स्थिति मलक्का जलडमरूमध्य के निकट होने के कारण इसे अत्यधिक सामरिक महत्व प्राप्त है। आधुनिक कंटेनर ट्रांसशिपमेंट टर्मिनल, अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा तथा अन्य आधारभूत सुविधाएँ भारत की समुद्री उपस्थिति को सुदृढ़ करने के साथ-साथ हिंद-प्रशांत क्षेत्र में उसकी रणनीतिक भूमिका को भी मजबूत बनाती हैं।

यह परियोजना भारतीय नौसेना, भारतीय तटरक्षक बल तथा अन्य समुद्री सुरक्षा एजेंसियों के लिए बेहतर लॉजिस्टिक सहायता उपलब्ध कराने में सहायक होगी। आधुनिक बंदरगाह और हवाई संपर्क के माध्यम से समुद्री निगरानी, आपदा प्रबंधन तथा मानवीय सहायता एवं राहत (HADR) अभियानों की क्षमता में भी वृद्धि होने की संभावना है। परियोजना में आपदा जोखिम प्रबंधन तथा ऊर्जा सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए आवश्यक व्यवस्थाएँ भी प्रस्तावित की गई हैं।

इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में भारत की सक्रिय भूमिका SAGAR (Security and Growth for All in the Region) की भावना के अनुरूप है। ग्रेट निकोबार परियोजना इस दृष्टिकोण को व्यावहारिक रूप प्रदान करती है तथा क्षेत्रीय संपर्क, समुद्री सहयोग और आर्थिक विकास के नए अवसर उपलब्ध कराती है।

नीति सुझाव (Policy Suggestions)

1. ग्रेट निकोबार परियोजना के सभी चरणों का समयबद्ध एवं प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए।
2. बंदरगाह, हवाई अड्डे तथा ऊर्जा अवसंरचना के विकास में आधुनिक एवं हरित प्रौद्योगिकियों का अधिकतम उपयोग किया जाए।
3. स्थानीय समुदायों के कौशल विकास एवं रोजगार सृजन पर विशेष ध्यान दिया जाए, ताकि परियोजना के लाभ समाज के सभी वर्गों तक पहुँच सकें।
4. समुद्री व्यापार, लॉजिस्टिक्स तथा ब्लू इकोनॉमी से संबंधित अनुसंधान एवं नवाचार को प्रोत्साहित किया जाए।
5. भारत की समुद्री नीति को Maritime Amrit Kaal Vision 2047, सागरमाला कार्यक्रम तथा Act East Policy के साथ समन्वित रूप से आगे बढ़ाया जाए।
6. पर्यावरणीय संरक्षण, जैव विविधता और सतत विकास के निर्धारित मानकों का निरंतर पालन सुनिश्चित किया जाए, जिससे विकास और संरक्षण के बीच संतुलन बना रहे।

इन सुझावों के प्रभावी क्रियान्वयन से ग्रेट निकोबार परियोजना भारत की समुद्री क्षमता, राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक विकास तथा वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को और अधिक सुदृढ़ कर सकती है तथा अमृत काल विज़न 2047 के उद्देश्यों की प्राप्ति में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

7. निष्कर्ष (Conclusion)

अमृत काल विज़न 2047 भारत को एक विकसित, आत्मनिर्भर एवं वैश्विक नेतृत्वकर्ता राष्ट्र के रूप में स्थापित करने की व्यापक राष्ट्रीय परिकल्पना है। इस लक्ष्य की प्राप्ति में समुद्री क्षेत्र का विकास अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वर्तमान वैश्विक अर्थव्यवस्था, व्यापार एवं सामरिक प्रतिस्पर्धा में समुद्री मार्गों की भूमिका निरंतर बढ़ रही है। ऐसे परिदृश्य में ग्रेट निकोबार परियोजना भारत की दीर्घकालिक समुद्री रणनीति का एक महत्वपूर्ण आधार बनकर उभर रही है।

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि ग्रेट निकोबार परियोजना केवल एक आधारभूत संरचना परियोजना नहीं है, बल्कि यह भारत की समुद्री सुरक्षा, वैश्विक व्यापार, ब्लू इकोनॉमी, लॉजिस्टिक्स, क्षेत्रीय संपर्क तथा राष्ट्रीय विकास को नई दिशा प्रदान करने वाली बहुआयामी पहल है। अंतरराष्ट्रीय

कंटेनर ट्रांसशिपमेंट टर्मिनल, ग्रीनफील्ड अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा, आधुनिक टाउनशिप तथा ऊर्जा अवसंरचना जैसी सुविधाएँ भारत की समुद्री क्षमता को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान देंगी।

हिंद महासागर एवं इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में भारत की बढ़ती भूमिका को देखते हुए यह परियोजना देश की रणनीतिक स्थिति को और अधिक मजबूत बनाती है। साथ ही, यह विदेशी ट्रांसशिपमेंट बंदरगाहों पर निर्भरता कम करने, व्यापारिक प्रतिस्पर्धा बढ़ाने तथा भारत को वैश्विक समुद्री व्यापार के प्रमुख केंद्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

परियोजना के क्रियान्वयन में पर्यावरणीय संरक्षण, जनजातीय हितों की सुरक्षा तथा सतत विकास के लिए आवश्यक उपायों को भी सम्मिलित किया गया है, जिससे विकास और संरक्षण के मध्य संतुलन बनाए रखने का प्रयास दिखाई देता है।

अंततः कहा जा सकता है कि ग्रेट निकोबार परियोजना अमृत काल विज़न 2047 की समुद्री आकांक्षाओं का एक सशक्त प्रतीक है। यह परियोजना भारत को आर्थिक रूप से अधिक सक्षम, सामरिक रूप से अधिक सुरक्षित तथा वैश्विक स्तर पर एक प्रभावशाली समुद्री शक्ति के रूप में स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। आने वाले वर्षों में यह परियोजना भारत के समुद्री इतिहास में एक मील का पत्थर सिद्ध होने की क्षमता रखती है।

संदर्भ सूची (References) - APA

1. Government of India. (2026). Great Nicobar Project: Strategic Importance and Sustainable Development. Press Information Bureau.
2. Press Information Bureau. (2026, May 1). PIB Backgrounder: Great Nicobar Project. Government of India.
3. Ministry of Ports, Shipping and Waterways. (2023). Maritime Amrit Kaal Vision 2047. Government of India.
4. Ministry of Ports, Shipping and Waterways. (2023). Maritime India Vision 2030. Government of India.
5. NITI Aayog. (2022). India's Blue Economy: A Draft Policy Framework. Government of India.
6. Ministry of Environment, Forest and Climate Change. (2006). Environmental Impact Assessment Notification. Government of India.
7. Government of India. Sagarmala Programme: Port-led Development. Ministry of Ports, Shipping and Waterways.
8. Ministry of External Affairs. Security and Growth for All in the Region (SAGAR). Government of India.



EARN YOUR MBA

WWW.IIMPS.IN



Accreditation & Ranking



UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

☎ 011-41005174

RESEARCH
GATEWAY

STOP PLAGIARISM



Arogyam Ayurveda
Holistic Healing through herbs



AROGYAM
ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

परिवर्तन

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD



BLUE

Calms your Child's
Mind & Body

YELLOW

Promotes Concentration,
Stimulates the Memory

PINK

Evokes Empathy,
makes your Child Calm

RED

Excites and energizes
your Child's body

GREEN

Improves Reading speed
and Comprehension

www.parivartan4u.com

परिवर्तन



Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY**

ISSN – 2250 – 1959 (O) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMSST.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
COMMERCE, ARTS AND SCIENCE**

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES**

ISSN 2277 – 9809 (O) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE
ENGINEERING AND TECHNOLOGY**

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM



**INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION**

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM



**JOURNAL OF LEGAL STUDIES, POLITICS
AND ECONOMICS RESEARCH**

WWW.JLPER.COM

JLPE